International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

राजा राममोहन राय का पत्रकारिता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान

Dr. Sanjeet
Lecturer in History
G.S.S. Baniyani , District- Rohtak (HR.)
E-mail: sanjeetkanheli1980@gmail.com

शोध आलेख सार– भारतीय नवजागरण के इतिहास में राजा राममोहन राय का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। चूंकि भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद छापेखाने की शुरूआत 1778ई0 में हो चुकी थी और जिस समय राजा राममोहन राय ने पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया तो उस समय भारतीय समाचारपत्रों पर ब्रिटिश सरकार ने अंकुश लगा रखा था। परन्तु देशी पत्रकारिता के क्षेत्र में राजा राममोहन राय की भूमिका अग्रणी थी और शायद वे ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने प्रेस की स्वतन्त्रता के लिए प्रथम आन्दोलन का शंखनाद किया। वास्तव में तत्कालीन परिस्थितियों में राजा राममोहन राय ने तत्कालीन बकिंघम साहब की पत्रिका 'कैलकटा जर्नल' का नैतिक समर्थन किया और 1818ई से लेकर अगले 5 वर्ष तक वे इस पत्रिका के द्वारा अपना निरन्तर सुधारवादी कार्यक्रम चलाते रहे और आगे चलकर उन्होंने 'सम्वाद कौमुदी' तथा 'मिरातुल अखबार' जैसी महत्वपूर्ण पत्रिकाओं की बागडोर अपने हाथ में ली। उनके प्रयासों से भारतीय पत्रकारिता को एक मजबूत आधार मिला तथा उनके प्रयासों से भारतीय पत्रकारिता को नये आयाम मिले। प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय पत्रकारिता के क्षेत्र में राजा राममोहन राय के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालता है।

मूलशब्द– पत्रकारिता, प्रेस, पुनर्जागरण, संवाद कौमुदी, मिरातुल अखबार, धार्मिक और सामाजिक समस्याऐं, बांग्ला भाषा।

भूमिका– वस्तुतः राजा राममोहन राय ब्रह्म समाज के संस्थापक, भारतीय भाषायी प्रेस के प्रवर्तक, जनजागरण और सामाजिक सुधार आन्दोलन के प्रणेता तथा बंगाल में नवजागरण युग के पितामह थे। वे एक महान विद्वान और स्वतंत्र विचारक थे, जिनका धार्मिक और सामाजिक सुधार आन्दोलन के क्षेत्र में सबसे अग्रणी नाम आता है। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और पत्रकारिता के क्षेत्र में अहम भूमिका अदा की और तत्कालीन भारतीय

समाज में फैले अंधविश्वास और रूढीवादिता के विरूद्ध अपनी लेखनी चलाई। उनके सुधार आन्दोलनों ने न केवल भारतीय समाज में अमूल–चूल परिवर्तन लाने में भूमिका अदा की बल्कि उनकी निर्भिक भूमिका ने भारतीय पत्रकारिता को भी नई भूमिका दी। अंततः अधिकांश बुद्धिजीवियों का मानना है कि राजा राममोहन राय ही भारतीय पुनर्जागरण के संस्थापक हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि राजा राममोहन राय भारतीय पुनर्जागरण काल की महत्वपूर्ण हस्ती हैं।

तत्कालीन समय में प्रेस की स्थिति– वस्तुतः 18वीं सदी में अंत के वर्षों में बंगाल के हुगली नगर में पहला बांग्ला छापाखाना 1778 में और उसके बाद 1780 में कलकता में पहला अंग्रेजी छापाखाना शुरू हुआ। चूंकि मद्रास में 1772 में ही छापाखाना शुरू हो चुका था लेकिन कलकता में 1780 तक किसी पत्र–पत्रिका का प्रकाशन शुरू नहीं हुआ था।[1] वास्तव में 1789 में वारेन हेस्टिंग के कार्यकाल में 1779 में कलकता में सरकारी प्रेस शुरू हो चुकी थी और इससे पहले सभी सरकारी कागजात विदेशों में छपकर आते थे। भारत में 29 जनवरी 1780 को बंगाल गजट के नाम से एक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ, इस समय प्रेस पर सरकार का पूर्ण नियंत्रण था। 1784 में कलकता से 'कैलकटा गजट', 1785 में 'बंगाल जर्नल', इसी वर्ष 'ओरियंटल मैग्जीन', 1786 में 'कैलकटा क्रानिकल', पत्र–पत्रिकाऐं प्रकाशित हुई और दूसरी तरफ मद्रास से 'मद्रास कुरियर' (1785) और 1795 में 'मद्रास गजट' का प्रकाशन हुआ। इसी तरह बम्बई से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाऐं 'बॉम्बे हेराल्ड' (1789) और 'बॉम्बे गजट' (1791) प्रमुख थी।[2]

इसके अतिरिक्त तत्कालीन समय में श्रीरामपुर के बैप्टिस्ट मिशन की पत्रिका फ्रैंड ऑफ इंडिया (1818), जार्ज प्रिचर्ड के सम्पदान में 'जान बुल इन दा ईस्ट' (1821), 'समाचार दपर्ण' (रेवरेण्ड मार्शमैन द्वारा सम्पादित, 1818), फारसी भाषा की पत्रिका, 'जाम ई जहाँनुमा', राजा राममोहन राय के विरोधियों द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'समाचार चन्द्रिका' (1823), 'उदन्त मार्तण्ड'(1826), पहली हिन्दी पत्रिका जुगल किशोर द्वारा सम्पादित तथा 'बंगदूत' (1829), बंगाल हेराल्ड का बांग्ला संस्करण प्रमुख पत्र–पत्रिकाऐं थी।

[1] मुखोपाध्याय, **राजा राममोहन राय, तत्कालीन समाज और साहित्य,** पृ0 108.
[2] एस. नटराजन, **ए हिस्ट्री आफ प्रेस इन इंडिया,** पृ0 20

चूंकि भारत में 1799 से पहले प्रेस से सम्बन्धित कोई भी विशेष कानून नहीं था तो लार्ड वैलजली ने 1799 में पहला प्रेस रेगुलेशन जारी किया। इस कानून के तहत किसी भी अपराधी सम्पादक को भारत से निर्वासित करने का प्रावधान था। इस समय सरकारी सचिव के लिए भी सेंसर के कार्य को अमली जामा पहनाने के लिए कुछ नियम जारी किये गए तथा कुछ मामलों में राजस्व, सैन्य समाचार, तथा जहाजरानी की खबरे छापने पर प्रतिबन्ध लगाया गया और यह व्यवस्था 1835 तक कायम रही।

राजा राममोहन राय की पत्रकारिता के क्षेत्र में भूमिका – यह बात सर्वविदित है कि तत्कालीन समय में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय समाचार पत्रों पर काफी अंकुश लगा रखा था और बैप्टिस्ट मिशन ने राजा राममोहन राय के लेखों को छापने से मना कर दिया था तो राजा राममोहन राय ने स्वयं के पत्र–पत्रिकाऐं छापने का निर्णय लिया। वास्तव में वे समाचार पत्रों की पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका से भलीभांति परिचित थे। जब 1818 में प्रेस कानून में कुछ बदलाव किया गया तथा भारतीय पत्र–पत्रिकाओं को कुछ राहत दी गई तो राजा राममोहन राय ने देशी पत्रकारिता के गठन की तरफ ध्यान दिया। वास्तव में भारत में देशी पत्रकारिता का जन्म पत्रकारिता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। 15 मई 1818 को श्री हरचन्द राय ने 'बंगाल गैजेटी' नामक एक साप्ताहिक पत्रिका शुरू करके देशी पत्रकारिता का बीजारोपण किया।[3] इस पत्रिका के स्वामी हरचन्द राय राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित आत्मीय सभा के सदस्य थे। यह पत्रिका एक वर्ष के बाद बन्द हो गई, परन्तु इस पत्रिका से देशी पत्रकारिता की नींव पड़ी और राजा राममोहन राय द्वारा लिखित सती प्रथा के बारे में एक लेख इसी पत्रिका में छपा। वस्तुतः जब 1815 में राजा राममोहन राय कलकता आकर बसे तो उस समय पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना स्थान सुनिश्चित करना आसान काम नहीं था और राजा राममोहन राय का स्वाभिमान इतना प्रखर था कि वे सरकारी नियमों का पालन करके किसी पत्रिका का संपादन नहीं कर सकते थे। यहां ये बात वर्णन योग्य है कि उस समय कैलकटा जर्नल पत्रिका यूरोपीय लोगों के साथ–साथ भारतीयों में भी काफी लोकप्रिय हो चुकी थी और इस

[3] के.सी. दत्त, **राजा राममोहन रायः जीवन और दर्शन,** पृ0 279.

पत्रिका के सम्पादक जे.एस. बंकिघम के साथ राजा राममोहन राय के अच्छे सम्पर्क स्थापित हो चुके थे। इसके बावजूद राजा राममोहन राय के मन में देशी भाषा की पत्रिका की कमी अवश्य खलती रही ताकि देशी पत्रिका के माध्यम से भारतीय धर्म, सभ्यता, एवं संस्कृति के बारे में पूर्ण रूप से लिखा जा सके।

इसी कमी को दूर करते हुए राजा राममोहन राय ने 4 दिसम्बर 1821 को 'सम्वाद कौमुदी' नामक पत्रिका की शुरूआत की। यह पत्रिका देशी सम्पदान में पहली महत्वपूर्ण पत्रिका मानी जाती है। इस पत्रिका के माध्यम से तत्कालीन हिन्दू समाज के सुशिक्षित और प्रगतिशील दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति देश सुधार के कार्यक्रमों में लग गए। इस पत्रिका के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए प्रथम अंक में लिखा गया कि यह पत्रिका धर्मनीति और राष्ट्र विषयक आलोचना, देश की आंतरिक घटनाओं, देश–विदेश के समाचार, लोक हित में ही छापेगी।[4] यद्यपि प्रारम्भ में इस पत्रिका के संचालन का कार्य श्री ताराचन्द दत व भवानी चरण को दिया गया, फिर भी इसके सफल संचालन में राजा राममोहन राय की पूर्ण भूमिका थी। कुछ समय के बाद राजा राममोहन राय के मित्रों ने विश्वासघात किया और इस पत्रिका से किनारा कर लिया। इस दौरान बंकिघम साहब की पत्रिका में अंग्रेजी भाषा में सम्वाद कौमुदी में प्रकाशित लेख छपते रहे तथा अनेकों विरोधों के बावजूद राजा राममोहन राय ने सम्वाद कौमुदी पत्रिका का संचालन जारी रखा। चूंकि 'सम्वाद कौमुदी' जनता के लिए शुरू की गई और इसके विचार शिक्षित वर्ग के लिए काफी महत्वपूर्ण होते थे। इस पत्रिका में अधिकांश लेख बांग्ला व अंग्रेजी भाषा में राजा राममोहन राय द्वारा लिखे जाते थे।

यदि राजा राममोहन राय के द्वारा शुरू होने वाले पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन किया जाये तो यह बात स्पष्ट होती है कि उन्होंने 1821 में 'सम्वाद कौमुदी' पत्रिका को संस्थापित किया तथा राजा राममोहन राय ने 'ब्राह्मणिकल मैग्जीन' को 1822 में संपादित किया। यह बांग्ला पत्रिका का अंग्रेजी संस्करण था। राजा राममोहन राय के कार्यकाल में इसके केवल 3 या 4 ही अंक निकले। इसी वर्ष उन्होंने 'ब्राह्मण सेवधि' का सम्पादन किया

[4] के.सी. दत्त, **राजा राममोहन रायः जीवन और दर्शन,** पृ0 281.

तथा इसके भी 3 या 4 अंक निकले। इसी क्रम में उन्होंने फारसी भाषा की पत्रिका 'मिरातुल अखबार' निकाली। 1829 में राजा राममोहन राय ने द्वारकानाथ ठाकुर के सहयोग से 'बंगाल हेराल्ड' का संचालन शुरू किया।

अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद राजा राममोहन राय ने 1822 में 'मिरातुल अखबार' का प्रकाशन शुरू किया और इसके सम्पादकीय अंक में उन्होंने लिखा कि मेरा एकमात्र उद्देश्य है कि मैं जनसाधारण के सामने ऐसे उपयोगी समाचार और लेख प्रस्तुत करूं जिससे उनका ज्ञान और अनुभव बढे एवं सामाजिक उन्नति में सहायक हों। मैं अपनी योग्यता के अनुसार शासक वर्ग को प्रजा की वास्तविक स्थिति के बारे में सूचित कर सकूंगा तथा साथ ही प्रजा को प्रचलित कानून और शासक वर्ग के आचार–व्यवहार से परिचित करवा सकूंगा। पत्रिका शासक वर्ग के लिए जनता को तुरन्त राहत पहुंचाने का माध्यम बनेगी और जनता के लिए शासक श्रेणी के बदइन्तजामी से सुरक्षा और क्षतिपूर्ति प्राप्त करने का साधन होगी।[5] उनके इस प्रयास की बंकिघम साहब ने भी प्रशंसा की और यह पत्रिका धीरे–धीरे अल्प अवधि में ही सम्पूर्ण उत्तर भारत में लोकप्रिय हो गई। फारसी भाषा उस समय पूरे उतर भारत में अदालती व राजकीय कार्यों में प्रयुक्त होती थी, इसलिए समाज के प्रतिष्ठित वर्ग और मुस्लिम लोगों ने इसका पूरा साथ दिया। 'मिरातुल अखबार' में भी देशी और विदेशी घटनाओं के समाचार छपते थे। इस पत्रिका के एक अंक में राजा राममोहन राय ने आयरलैंड के कैथोलिक ईसाईयों की दुर्दशा पर एक लेख लिखा जो ब्रिटिश सम्राट और राजधर्म पर करारा प्रहार था। शायद किसी भारतीय द्वारा लिखित यह प्रथम संवेदना पूर्ण लेख माना जा सकता है, जिसके द्वारा ब्रिटिश अन्याय पर विस्तार से लिखा गया। इस पत्रिका के दूसरे अंक में 11 अक्तूबर 1822 को राजा राममोहन राय ने आयरलैंड में फैले असंतोष और दुःखद अवस्था पर करारी चोट की।

1823 में ब्रिटिश सरकार ने प्रेस आर्डिनेंस के अन्तर्गत एक अध्यादेश जारी किया और इसके अनुसार किसी पत्र या पत्रिका को सरकार की अनुमति के बिना संचालित नहीं किया जा सकता था।[6] इसके द्वारा पत्र–पत्रिकाओं के मालिकों और सम्पादकों के लिए कुछ

[5] मुखोपाध्याय, **राजा राममोहन राय, तत्कालीन समाज और साहित्य,** पृ0 128.
[6] के.सी. दत्त, **राजा राममोहन रायः जीवन और दर्शन,** पृ0 282.

नियंत्रण लगा दिये गए तथा विशेष प्रकार के समाचार छापने पर पाबन्दी लगा दी गई। यह अध्यादेश प्रेस का गला घोटने वाला माना गया। इसी दौरान बंकिघम साहब को भारत से निर्वासित करके इंग्लैंड भेज दिया गया तथा राजा राममोहन राय एवं उनके मित्रों ने सरकार के इस कठोर कदम के विरूद्ध आवाज उठाने का निर्णय लिया। राजा राममोहन राय ने सरकार के सामने एक ज्ञापन पत्र प्रस्तुत किया परन्तु इस पर सरकार ने व सुप्रीम कोर्ट ने कोई भी सहानुभूति पूर्वक निर्णय नहीं लिया। इससे राजा राममोहन राय काफी दुःखी हुए। सुप्रीम कोर्ट द्वारा उनके ज्ञापन को ठुकराए जाने पर एक अपील इंग्लैड के राजा के पास भेजी गई। इस अपील में उन्होंने लिखा कि जिस प्रकार यह अधीनियम पास हुआ है उससे न केवल प्रेस की आजादी बल्कि ब्रिटिश संसद के कानूनी सुरक्षा के अधिकार से भी वंचित किया गया हैं। राजा राममोहन राय ने अपनी दलील देते हुए कहा कि जन शिकायतों का निवारण करके ही अराजकता व विद्रोह की घटनाऐं रोकी जा सकती हैं, परन्तु राजा राममोहन राय की दलील व अपील ब्रिटिश सरकार द्वारा अस्वीकृत कर दी गई। राजा राममोहन राय की अपील का बौद्धिक समाज और सरकारी हल्कों में तो स्वागत हुआ, परन्तु जनता को इसका कोई लाभ नहीं मिला तथा ब्रिटिश सरकार का रवैया पूर्ववर्ती ही बना रहा।

वस्तुतः 1823 से लेकर राजा राममोहन राय के 1830 में विदेश यात्रा के समय तक बांग्ला भाषा में कई नये पत्र–पत्रिकाऐं शुरू हुई। ये पत्रिकाऐं राजा राममोहन राय के विरोध में लिखती थी। इस दौरान राजा राममोहन राय ने ब्रिटिश सरकार की प्रेस विरोधी नीति के कारण अपनी फारसी पत्रिका 'मिरातुल अखबार' का प्रकाशन बन्द कर दिया। यह राजा राममोहन राय की सोची समझी विरोध नीति एवं एक ऐसा साहसिक कदम था जिसका कालांतर में व्यापक प्रभाव पड़ा। इसके बाद राजा राममोहन राय कई वर्ष तक पत्र–पत्रिकाओं के कार्यक्षेत्र से दूर रहे। 1829 में उन्होंने अपने सहयोगी मोन्टगोमरी मार्टिन, द्वारकानाथ ठाकुर, प्रसन्न कुमार ठाकुर, नीलरत्न हालदार और राजकृष्ण सिंह के साथ मिलकर अंग्रेजी भाषा की पत्रिका 'बेंगाल हेराल्ड' का प्रकाशन शुरू किया। इस समय ब्रिटिश सरकार ने प्रेस कानून में कुछ उदारता दिखाई और इसका प्रभाव इस नई पत्रिका पर भी पड़ा। इस पत्रिका का उद्देश्य भारत की घटनाओं के बारे में लिखना था। इसके

साथ–साथ विदेशी घटनाओं को भी इसमें यथायोग्य स्थान मिला। चूंकि राजा राममोहन राय का सम्बन्ध इस पत्रिका से अधिक समय तक नहीं रहा और वे 1830 में नवम्बर माह में इंग्लैंड के लिए रवाना हो गये।[7] इस तरह पत्रकारिता के विकास में राजा राममोहन राय की भूमिका अपने गन्तव्य तक जाने में कुछ समय के लिए स्थिर हो गई और उनके बाद नील रत्न हालदार ने हिन्दुस्तानी पत्रिका 'बंगदूत' का प्रकाशन किया।

सारांशः इस तरह भारतीय पत्रकारिता के क्षेत्र में राजा राममोहन राय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके इस योगदान के बारे में मोन्टमोगरी मार्टिन ने लिखा कि भारतीय पत्रकारिता के क्षेत्र में राजा राममोहन राय ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिनका अभार हम सभी को मानना चाहिए। उनके द्वारा प्रेस की आजादी के लिए किये गए संघर्ष में उनकी भूमिका को याद करते हुए 9 फरवरी 1838 को एक स्मृति सभा का आयोजन हुआ जिसमें उन्हें भावभीनी श्रद्धांजली दी गई। उनके बारे में एकत्रित हुए समाज के बुद्धिजीवी वर्ग ने उनके स्वाधीन पत्रकारिता के लिए लड़े गए निर्णायक युद्ध में उनकी निर्भीक भूमिका को पहचाना गया। इस दौरान यह बात उभर कर सामने आई कि अनेकों समस्याओं के बावजूद राजा राममोहन राय ने देशी पत्रकारिता का मार्ग प्रशस्त किया और प्रेस की स्वाधीनता के लिए जोरदार आन्दोलन की शुरूआत की। चूंकि 'सम्वाद कौमुदी' की फाईल आज तक उपलब्ध नहीं हुई है परन्तु दूसरे पत्र–पत्रिकाओं के बारे में काफी तथ्य आज भी मौजूद हैं। इन साक्ष्यों के आधार पर राजा राममोहन राय की पत्रकारिता के बारे में काफी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। भारतीय पुनर्जागरण की शुरूआत करने वाले राजा राममोहन राय एक ऐसे यशस्वी पत्रकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिनका सम्मान आज भी कायम है।

सन्दर्भ सूची–

- रामकृष्ण शर्मा, **ब्रिटिशकालीन भारत का इतिहास**, एस चन्द एण्ड कंपनी, दिल्ली 1974.
- रविन्द्र कुमार, **आधुनिक भारत का सामाजिक इतिहास,** ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली, 1997ण्

[7] मुखोपाध्याय, **राजा राममोहन राय, तत्कालीन समाज और साहित्य,** पृ0 121.

- उर्मिल शर्मा एवं एस.के शर्मा, **भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन,** अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1999.
- पी.सी. जैन, **सामाजिक आन्दोलन का समाजशास्त्र,** नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2003.
- दीनानाथ वर्मा, **भारत में उपनिवेशवाद तथा राष्ट्रवाद,** ज्ञानंदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004.
- आशा रानी वोहरा, **स्वाधीनता सेनानी लेखक–पत्रकार,** प्रतिभा प्रतिष्ठान, 2004.
- राकेश सिन्हा, **राजनीतिक पत्रकारिता**, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2007.
- के.सी. दत्त, **राजा राममोहन रायः जीवन और दर्शन,** लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010.
- सुभाषचन्द्र शर्मा एवं साक्षी तिवारी, **विश्वविख्यात व्यक्तित्व,** वी.आर. पैराडाइज, नई दिल्ली, 2010.